सामाजिक - सांस्कृतिक संचेतना के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा- एक अध्ययन

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय की पी-एच.डी. हिंदी
की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

अनुसंधित्सु

अंजना मिश्रा

शोध निर्देशक

डॉ. अनीता शुक्ल

असि. प्रोफेसर,

हिंदी विभाग,

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा।

हिंदी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

सामाजिक - सांस्कृतिक संचेतना के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा- एक अध्ययन

शोध प्रेरणा एवं विषय चयन

उपन्यास हिंदी साहित्य की अत्यधिक लोकप्रिय विधा है । इसकी लोकप्रियता के अनेक कारण हैं । यह तो सत्य है कि अपने कथासार के कारण उपन्यास सामान्य से सामान्य पाठक को भी बांधे रखता है । साथ ही उपन्यास में मनुष्य के आंतरिक जीवन और बाह्य संघर्ष के चित्रण का पूरा अवकाश रहता है । प्रारंभ से ही मेरी रुचि उपन्यासों के प्रति विशेष रही है, क्योंकि वे कहीं न कहीं हमारे जीवन को छूते हैं । यही कारण है कि अपने शोध प्रबंध के लिए मैंने उपन्यास विधा को ही अध्ययन का विषय बनाया ।

उपन्यास साहित्य का एक अंग भर है, फिर भी समाज को प्रस्तुत करने का सबसे प्रबल माध्यम भी यही है । इसका सीधा संबंध मानव समुदाय से होता है और इसी संबंध की पृष्ठभूमि में उभरते हैं, समाज विशेष के सांस्कृतिक मूल्य । भारतीय संस्कृति मानव जीवन की अमूल्य धरोहर है। अपनी गौरवमयी सांस्कृतिक परंपरा के कारण ही हजारों हजारों वर्ष तक पराजित रहने के बाद भी भारतीय संस्कृति ने अपनी नींव को बनाए रखा और वह विलुप्त नहीं हुई । समाज में सांस्कृतिक संचेतना बनाए रखने में अनेक

संस्थापकों, समाज सुधारकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इनके अथक परिश्रमों के फलस्वरूप आज अनेक नए नियम, कानूनों द्वारा समाज में व्याप्त सामाजिक कुप्रथा पर प्रतिबंध लगाकर निर्योग्यताओं को दूर किया गया है । उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिए गए जिससे समाज में नवीन सांस्कृतिक परिवर्तन आए, खास करके स्त्रियों की स्थिति में । सच कहा जाए तो संस्कृति ही विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक परंपराओं के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व में सांस्कृतिक चेतना पैदा करती है और उसके व्यक्तित्व का विकास करती है । यदि किसी व्यक्ति या समाज की कोई संस्कृति ही ना हो तो वह व्यक्ति या समाज सही तरीके से अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकता है, क्योंकि संस्कृति के अभाव में व्यक्ति या समाज पशुवत होता है । यह संस्कृति ही है जो मानव व्यवहार को नियमित कर उसे संस्कारों से भर देती है।

मुझे अपनी संस्कृति से विशेष मोह रहा है । इसलिए जब मुझे शोध कार्य करने का अवसर मिला तो मैंने इसी विषय को अपना माध्यम बनाया । सांस्कृतिक मूल्यों का पोषण छायावादोत्तर उपन्यासों में अधिक हुआ है । विशेषकर वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास प्रचुर मात्रा में हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को उद्घाटित करते हैं । उनके उपन्यासों में उत्तर वैदिक युग से लेकर 19वीं शताब्दी के अंतिम चरण तक का इतिहास सिमटा हुआ है । उन्होंने हर उस युग को छुआ है । जिसमें सांस्कृतिक क्षेत्रों में भारत ने अपनी छवि को सजाया-संवारा है । 'भुवन विक्रम' की वैदिक समाज व्यवस्था, दसवीं- ग्याहरवीं शताब्दी की नृत्य और स्थापत्य कला, 15वीं शताब्दी का शौर्य, 18वीं शताब्दी में 'माधव जी सिंधिया' की देश को अंग्रेजों की आगत समस्या और मुगलों की गिरती साख से बचाने की छटपटाहट, 1857

की क्रांति तथा दुर्गावती के माध्यम से चित्रकला और न्यायप्रियता, अहिल्याबाई के माध्यम से शौर्य न्याय और भक्ति की स्थापना के प्रयास, हमारे परंपरागत मूल्य हैं, जो हमारे सांस्कृतिक आयामों को, उनके विविध पहलुओं के माध्यम से छूते हैं । उनके ये ऐतिहासिक उपन्यास इसलिए और महत्वपूर्ण हो उठे हैं क्योंकि इनमें हमारे उस इतिहास को जिसे अंग्रेजों ने तोड़ मरोड़ कर, अपने स्वार्थ की धूल से धुंधला बनाकर प्रस्तुत किया था, तथ्यात्मक जानकारी के आधार पर सत्य रूप में सामने लाया गया है । उनके सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और कुछ राजनीतिक घटनाओं को आधार बनाकर लिखे गए उपन्यास भी हैं। इन सभी में हमारी सामाजिक परंपराओं और चिंतन धाराओं को एक स्थायी स्वरूप प्रदान किया गया है। एक आदर्श जीवन पद्धति तथा जीवन दर्शन हमें इन कृतियों में निरंतर दिखाई देता है । इसी स्वस्थ सांस्कृतिक परंपरा ने मुझे उनकी कृतियों की ओर आकर्षित किया । जब मैंने लेखक वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों पर काम करने की चर्चा अपनी निर्देशिका आदरणीय डॉ. अनीता शुक्ल से की, तो उन्होंने मेरे इस शोध कार्य मैं अपना योगदान देने की सहर्ष स्वीकृति दे दी, और मैंने अपने शोध प्रबंध का विषय 'सामाजिक - सांस्कृतिक संचेतना के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा- एक अध्ययन' चुना ।

मेरा मुख्य विषय सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना से जुड़ा हुआ है जिस पर मैंने अधिक भार दिया है। मैंने अपने माता-पिता एवं गुरुजनों के आशीर्वाद से यह शोध कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

शोध प्रबंध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय :- समाज एवं सांस्कृतिक संचेतना

1.1 समाज

1.2 संस्कृति

1.3 संचेतना

1.3.1 समाज में सांस्कृतिक संचेतना

1.3.2 सांस्कृतिक संचेतना के विभिन्न घटक

1.3.3 सांस्कृतिक संचेतना के सामाजिक मूल्य

1.3.4 सामाजिक संचेतना के राजनीतिक मूल्य

1.3.5 सांस्कृतिक संचेतना के धार्मिक मूल्य

द्वितीय अध्याय :- **सामाजिक - सांस्कृतिक उपन्यासों की पृष्ठभूमि**

2.1 हिंदी गद्य का विकास

2.2 हिंदी उपन्यास का विकास

2.3 उपन्यास का अर्थ एवं स्वरूप

2.4 उपन्यास की परिभाषा

2.5 उपन्यास के विविध प्रकार

2.6 हिंदी का प्रथम उपन्यास

2.7 उपन्यासों की पृष्ठभूमि

2.7.1 भारतेंदुयुगीन उपन्यास

2.7.2 द्विवेदी युगीन उपन्यास

2.7.3 प्रेमचंद युगीन उपन्यास

2.7.4 प्रेमचंदोत्तर उपन्यास

तृतीय अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 व्यक्तित्व

3.1.1 जन्म

3.1.2 परिवार

3.1.3 बचपन

3.1.4 शिक्षा

3.1.5 साहित्य प्रेमी

3.1.6 कुश्ती एवं व्यायाम प्रेमी

3.1.7 संगीत एवं कला प्रेमी

3.1.8 साहित्य सृजन की प्रेरणा

3.2 कृतित्त्व

3.2.1 उपन्यास

3.2.2 नाटक

3.3.3 कहानियां

3.3.4 एकांकी

3.3.5 आत्मकथा

3.3.6 स्फुट

3.3.7 गद्य काव्य

3.3.8 अप्रकाशित रचना

चतुर्थ अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में सामाजिक संचेतना की अभिव्यक्ति

4.1 उपन्यास में समाज का स्वरूप
4.2 उपन्यासों की आर्थिक पृष्ठभूमि
4.3 उपन्यासों की धार्मिक पृष्ठभूमि
4.4 उपन्यासों की राजनीतिक पृष्ठभूमि

पंचम अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक संचेतना

5.1 ऐतिहासिक उपन्यासों की पृष्ठभूमि
5.2 संस्कृति
5.3 स्वदेश
5.4 राष्ट्र

षष्ठ अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का शिल्प

6.1 शिल्प का शाब्दिक अर्थ
6.2 शिल्प की परिभाषाएं
6.3 उपन्यास शिल्प के विभिन्न अंग
6.3.1 कथानक
6.3.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण
6.3.3 संवाद योजना
6.3.4 देशकाल और वातावरण
6.3.5 उद्देश्य
6.3.6 भाषा शैली
6.3.6.1 ऐतिहासिक उपन्यासों की भाषा शैली

6.3.6.2 सामाजिक उपन्यास की भाषा शैली

6.4 लेखन शैली

- **उपसंहार**
- **संदर्भ-ग्रंथ सूची**

- **शोध प्रबंध में विषय-वस्तु का विवरण**

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत शोध प्रबंध को छ: अध्यायों में विभक्त किया है, साथ ही प्रत्येक अध्याय के अंत में संदर्भ सूची दी है।

प्रथम अध्याय :- समाज एवं सांस्कृतिक संचेतना

प्रथम अध्याय में मैंने समाज और सांस्कृतिक संचेतना का अर्थ समझाकर उसकी विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को लिखा हैं । इसके बाद समाज और संस्कृति पर प्रकाश डाला है। समाज और संस्कृति के बीच घनिष्ठ संबंध है । प्रत्येक समाज में संस्कृति के तत्व पाए जाते हैं । समाज के बिना न तो संस्कृति की कल्पना की जा सकती है न ही संस्कृति के बिना समाज की । संस्कृति के विभिन्न अंगों या पक्षों से संस्कृति का निर्माण होता है । इन अंगों का समावेश मनुष्य के आंतरिक जीवन से होता है। संस्कृति विरासत के रूप में मिलती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रहती है और यह हस्तांतरण की क्रिया चलती रहती है। संस्कृति ही व्यक्ति को समाज, राज्य एवं राष्ट्र से परिचित कराती है और समाज में मानव दृष्टिकोण को व्यापक बनाकर उनमें सामूहिक

भावना उत्पन्न करने का कार्य करती है, जिससे व्यक्ति सहयोग के आधार पर एक दूसरे से जुड़े रहें और अपने दृष्टिकोण को उदार बनाकर दूसरे व्यक्ति या समूह के लिए सोचें। संस्कृति समाज में नई आवश्यकताओं को जन्म देती है और व्यक्ति के मन में नवीन चेतना का संचार करती है। इसी अध्याय में संस्कृति के विभिन्न घटकों पर विस्तार से लिखा गया है। संस्कृति के अंतर्गत प्रथा, रीति-रिवाज, मूल्य, विश्वास, व्यवहार, धर्म, कला आदि का समावेश होता है । यह सभी संस्कृति के अंग हैं। जिनसे संस्कृति का निर्माण होता है । इन सभी अंगों का अपना एक महत्व होता है। जिसका संबंध मनुष्य के आंतरिक जीवन से होता है। इसके अतिरिक्त इसी अध्याय में मूल्यों की परिभाषा देते हुए सांस्कृतिक संचेतना के सामाजिक मूल्यों के बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए उनका विवेचन किया गया है। इसी प्रकार से इसी अध्याय में सांस्कृतिक संचेतना के राजनीतिक मूल्यों एवं धार्मिक मूल्यों पर भी प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय :- सामाजिक - सांस्कृतिक उपन्यासों की पृष्ठभूमि

उपन्यास हिंदी साहित्य की अत्यधिक लोकप्रिय एवं बहुचर्चित विधा है। गद्य साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास की जितनी उन्नति विश्व में हुई है उतनी किसी अन्य विधा की नहीं। इसकी लोकप्रियता के अनेक कारण हैं। उपन्यास कथा साहित्य का आधुनिक रूप है। पाश्चात्य साहित्य से बांग्ला साहित्य में और बांग्ला साहित्य में से हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा का आविर्भाव हुआ है । उपन्यास साहित्य का संपूर्णता से अवलोकन किया जाए तो उसके अनेक प्रकार हैं; जैसे अनूदित, ऐयारी, जासूसी, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक आदि। हिंदी साहित्य में उपन्यास का प्रारंभ 19वीं शताब्दी

से माना जाता है। कथा के विविध अवयवों की छानबीन लिखित और मौखिक परंपरा में इससे पहले से भी की जा सकती है किंतु आधुनिक अर्थ में उपन्यास 19वीं शताब्दी की देन है जिसकी अभिव्यक्ति का माध्यम गद्य है । हिंदी साहित्य का प्रथम उपन्यास आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' को स्वीकार किया है। हिंदी उपन्यास के क्रमिक विकास को अध्ययन की सुविधा के लिए अधिकांश विद्वानों ने विभिन्न भागों में विभाजित किया है। प्रेमचंद जी का आविर्भाव हिंदी साहित्य के क्षेत्र में चमत्कार माना जाता है। उनके साथ ही हिंदी उपन्यास में नया मोड़ आता है बल्कि यों कहा जाए कि वास्तविक अर्थों में उपन्यास युग आरंभ होता है। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से उठाकर जीवन के साथ सार्थक रूप में जोड़ने का काम किया। चारों ओर फैले हुए जीवन और अनेक सामाजिक समस्याओं, किसानों का शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज जैसी कुप्रथा और समाज में नारी की स्थिति आदि समस्याओं को उन्होंने अपने उपन्यासों में स्थान दिया।

द्वितीय अध्याय उपन्यास की पृष्ठभूमि से संबंधित है जिसके अंतर्गत मैंने हिंदी गद्य के विकास पर प्रकाश डालते हुए, हिन्दी गद्य में भारतेन्दु जी एवं द्विवेदी जी के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला है साथ ही इसी अध्याय में हिंदी उपन्यास के विकास पर विस्तार से विवेचना भी की है। जिसके अंतर्गत मैंने उपन्यास का अर्थ, स्वरूप और उसकी विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ लिखी हैं। हिंदी का प्रथम उपन्यास और उसके मतभेद के बारे में बताते हुए, उपन्यासों के विविध प्रकारों पर विस्तार से विवेचन किया है। हिंदी उपन्यास के विकास के विभिन्न चरणों पर विशद रूप से चर्चा करते हुए मैंने उन्हें चार खंडों भारतेंदुयुगीन उपन्यास, द्विवेदी

युगीन उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास - में विभक्त किया है। इसके अतिरिक्त उन कालों में आए प्रमुख उपन्यासकारों का नाम सहित संक्षिप्त परिचय भी दिया है ।

तृतीय अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

वृन्दावनलाल वर्मा जी प्रेमचंद के बाद हिन्दी के दूसरे महान उपन्यासकार एवं हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं, जिन्होंने न केवल हिन्दी में ऐतिहासिक उपन्यास की परंपरा का प्रवर्तन किया, बल्कि प्रेमचंद की कथा-परंपरा का भी विस्तार किया। वर्मा जी सरल, संयमी एवं विनम्र स्वभाव वाले लेखक हैं। वे जैसे जो कुछ हैं, अत्यंत सहज और स्पष्ट हैं। वे अन्याय के साथ समझौता न करने वाले व्यक्ति हैं। वर्मा जी ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रणेता हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य के उपन्यासों को एक नई दिशा प्रदान की। ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना ही इनका साधना क्षेत्र है। वर्मा जी की रचनाएं साहित्य की अनेक विधाओं में हैं। उपन्यास, नाटक, कहानी आदि प्राय: सभी गद्य की विधाओं में इन्होंने लिखा है। इन्होंने कविताएँ भी लिखीं परंतु सफलता न देख कर इस क्षेत्र को छोड़ दिया। उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा हिंदी के ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व उपन्यास लेखन प्रारम्भ किया और निरंतर लिखते रहे ।

तृतीय अध्याय को मैंने दो खंडों में विभक्त किया है। पहले खंड में मैंने वर्मा जी के जन्म और परिवार का परिचय देते हुए उनके बचपन, शिक्षा-दीक्षा एवं साहित्य पढ़ने के शौक के बारे में लिखा

है। साहित्य पढ़ने का इनका शौक ऐसा था कि बारह वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'चंद्रकांता संतति' पढ़ डाली। पंद्रह-सोलह वर्ष की अवस्था तक आते- आते उन्होंने 'गुलीवर्स ट्रेवल', 'रोविन्सन, 'सोल्जर्स वाइफ़', 'मर्चेन्ट ऑफ बेनिस' आदि कृतियों को कसकर पढ़ लिया था। वे केवल मन को ही पुस्तकों के अध्ययन से विकसित करना नहीं चाहते थे। शरीर को भी सुपुष्ट बनाने की ओर उनका ध्यान था। वे कुश्ती और व्यायाम के प्रेमी थे। झाँसी का अखाड़ा उनके दैनिक जीवन का एक प्रमुख अंग था। सत्तर साल की उम्र में भी वे बराबर कसरत करते थे और उनमें अपार बल था। व्यायाम के अतिरिक्त उन्हें यात्रा और शिकार का भी अत्यधिक शौक था। बुंदेलखंड के पहाड़ों, नदियों, नालों, जंगलों आदि का चप्पा-चप्पा उन्होंने छाना था। बुंदेलखंड की भूमि, उसके नदी, नाले, पर्वत-पहाड़, पेड-पौधे, दिन-रात के अनेक समयों का जैसा सूक्ष्म ज्ञान वर्मा जी को है उतना कम लोगों को होगा। इसके अतिरिक्त उनके संगीत एवं कलाप्रेम के विषय में भी लिखा है। वे ललित कलाओं के ज्ञाता थे। संगीत, चित्र, नृत्य कला और पुरातत्व उनके प्रिय विषय थे। हम उनकी संगीत कला के ज्ञान का उपयोग कई पुस्तकों में देखते हैं उदाहरण स्वरूप 'मृगनयनी' का बैजनाथ गायक और संगीतज्ञ है। 'माधवजी सिंधिया' में गान्ना बेगम सितार में दक्ष हैं। इसके अतिरिक्त वर्मा जी के साहित्य सृजन की प्रवृत्ति पर भी विशद रूप से प्रकाश डाला है। उनके परिवार में साहित्यिक वातावरण तो था ही उनके चाचा अच्छे कवि और लेखक थे। उनसे भी इन्हें साहित्यकार बनने की प्रेरणा मिली। दूसरे खंड में मैंने वर्मा जी के समग्र कृतित्व पर विशेष रूप से चर्चा की है। जिसमें मैंने उनके ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यास, ऐतिहासिक एवं सामाजिक नाटक, आत्मकथाएं, एकांकी,

लोकगीत, गद्य काव्य और काव्य को शामिल किया हैं । इसके अतिरिक्त मैंने उनकी अप्रकाशित रचनाओं पर भी प्रकाश डाला हैं तथा उनको भारत सरकार द्वारा मिले सम्मानों और पुरस्कारों पर भी चर्चा की हैं ।

चतुर्थ अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में सामाजिक संचेतना की अभिव्यक्ति

सर्वसाधारण के कुछ सामान्य कल्याण की पूर्ति के लिए शांतिपूर्वक प्रयत्नशील, मनुष्य का समूह समाज है। इन प्रयत्नों में उसके पारस्परिक व्यवहार, प्रेम सहानुभूति, आदि आ जाते हैं। परंतु कभी-कभी कुछ बाधाएं भी आ जाती हैं। यह बाधाएं प्राय: उसकी स्वार्थ भावना के कारण आती हैं। इन्हीं प्रयत्नों, बाधाओं, निष्कर्षों को लेकर उपन्यासकार सामाजिक उपन्यासओं का निर्माण करता है।

इतिहास की अपेक्षा समाज को लेकर चलने वाला उपन्यास लिखना अधिक सहज होता है। इतिहास को लेकर चलने वाले उपन्यास में उपन्यासकार को पीछे मुड़कर देखना होता है। किसी ऐतिहासिक सत्य को यथावत बनाए रखकर बड़ी खोज पूर्ण दृष्टि से अन्य सभी तथ्यों, वेशभूषा, परिवेश, भाषा व्यवहार, विचार और तत्कालीन सामाजिक भावनाओं का पता लगाना होता है, तब जाकर कहीं वह उसके उपन्यास भवन को खड़ा कर पाता है। सामाजिक उपन्यासों में यह सब रचनात्मक कठिनाइयां नहीं होती। विस्तृत सामाजिक परिवेश उपन्यासकार के सामने फैला पड़ा होता है। उसमें से उसे अपने हृदय को प्रभावित करने वाली किसी भी घटना से प्रेरणा मिली नहीं कि उसका सृजक कलाकार, निर्माण कार्य में लग जाता है और सामाजिक उपन्यास रूपी भवन तैयार हो जाता है। फिर भी कुछ कठिनाइयां

उपन्यासकार के सामने आ सकती हैं, जैसे किसी सामाजिक समस्या या मान्यता के संबंध में अपना मत स्थिर कर पाने की समस्या या सामाजिक मान्यता और स्वयं के मत में टकराव की समस्या। जो भी हो कलाकार सृजक होने के नाते जो भी निर्माण करता है वह सुंदर ही होता है। इसलिए इन उपन्यासों में भी कथाकार का आत्मिक सौंदर्य छिपा नहीं रह पाता।

वर्मा जी ने अपने चारों ओर के परिवेश से भी उसी प्रकार प्रेरणा ली है, जिस प्रकार इतिहास की कथाओं, भग्न मूर्तियों की भाषाओं, प्राचीन दुर्ग की प्राचीरों से ऐतिहासिक उपन्यास लिखे जाने की प्रेरणा ली है। वर्मा जी ने अपने सामाजिक उपन्यासों का निर्माण विविध सामाजिक समस्या जैसे वैवाहिक समस्या- दहेज प्रथा, विधवा प्रथा, अनमेल विवाह, दासी प्रथा आदि, ग्रामीण समस्या, धर्म, जाति, छुआछूत की समस्या, आदि अनेक समस्याओं के आधार पर किया है। इन समस्याओं को लेकर वर्मा जी ने 'लगन', 'संगम', 'कुंडली चक्र', 'प्रेम की भेंट', आदि उपन्यासों की रचना की है। इनकी यह सामाजिक समस्याएं ऐतिहासिक उपन्यासों में भी मिलती हैं जैसे 'टूटे कांटे', 'झांसी की रानी', 'कचनार', 'महारानी दुर्गावती' आदि उपन्यासों में। इन्हीं सभी समस्याओं और समस्याओं का निराकरण वर्मा जी के उपन्यासों के माध्यम से पाठकों के समक्ष आए हैं।

इस अध्याय को मैंने सुविधा के लिए चार खंडों में विभक्त किया है सबसे पहले खंड में मैंने वर्मा जी के उपन्यासों में समाज के स्वरूप को विस्तार पूर्वक दर्शाया है। जिसके अंतर्गत मैंने वर्मा जी के उपन्यासों में आए परिवार, जाति, धर्म, वर्ण, जाति, विवाह, दासप्रथा, सतीप्रथा, विधवा प्रथा, अनमेल विवाह आदि सामाजिक, किसानों, गरीब वर्ग ,मध्यम वर्ग, नारी की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। बाकी

के तीनों खंड वर्मा जी के उपन्यासों की पृष्टभूमि से संबंधित है। उपन्यासों की कथावस्तु जिस-जिस काल से संबंधित है, उन उपन्यासों को काल सहित उचित वर्गीकरण करके उनमें आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि को परिस्थितियों के अंतर्गत दर्शाया है। आर्थिक पृष्ठभूमि में खेती, उद्योग, व्यापार, राजा की आय के साधन, लगान आयात, निकास, जजिया कर आदि विभिन्न करों के विषय में चर्चा की है। धार्मिक पृष्ठभूमि में विभिन्न देवी-देवता, पूजा-पाठ, कर्मकांड, प्रवचन, विभिन्न धर्म, तीर्थ-यात्रा, शास्त्रार्थ, बलि-प्रथा, अंधविश्वास, टोना टोटका आदि पर चर्चा की है। राजनीतिक उपन्यासों में राजाओं-बादशाहों तथा उनके उत्तराधिकारी, मंत्री, जासूस, देश द्रोही, सेनापति, राजसभा, युध्द, न्याय, पंचायत, दंड, पुरस्कार आदि पर चर्चा की है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की तत्कालीन पृष्ठभूमि पर मैंने प्रमाणों सहित विशद रूप से प्रकाश डाला है। वर्मा जी ने अपने उपन्यासों को जिस पृष्ठभूमि को लेकर लिखा है वह वास्तविक है या नहीं ? किस स्थान या घटना पर उन्होंने कल्पना/जनश्रुतियों का सहारा लिया है उसका मैंने प्रमाणों सहित विवरण दिया है।

पंचम अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास साहित्य में सांस्कृतिक संचेतना

वृन्दावनलाल वर्मा जी ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रणेता हैं। उनका एक उपन्यास 'भुवनविक्रम' वैदिक काल से संबद्ध है, बाकी सभी उपन्यास 11वीं से 14वीं शताबधी के भारत से सम्बन्धित हैं, विशेषकर बुन्देलखण्ड से। उनके उपन्यासों की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि उसमें इतिहास की रक्षा हुई है, इतिहास को कहीं भी तोड़ा-

मरोड़ा नहीं गया है। वे जिस किसी घटना, स्थल, व्यक्ति आदि के विषय में लिखते हैं तो उससे सम्बन्धित विख्यात ऐतिहासिक तथ्यों, ग्रंथों, परंपरा, लोकगीत, आदि की पूरी जानकारी का गहरा अध्ययन करते हैं। उसके अतिरक्त वे तत्सम्बन्धित घटनाओं और पात्रों की कीड़ा-भूमि का चप्पा-चप्पा घूमकर अपने स्वयं के अनुभव और रचना द्वारा रंग भी भरते हैं। जिससे वह चित्र बड़ा ही आकर्षक और रंगीन हो जाता है। बिना जानकारी के वे कलम नहीं उठाते। तथ्यों तक पहुंचे बिना पुस्तक का प्रकाशन टलवाये रखते हैं। वे अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के आरंभ में इतिहास-स्रोतों का जो परिचय देते हैं, उससे इस बात का आभास होता है कि वे कितनी गहराई से जाकर इतिहास को देखते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने उपन्यासों में संस्कृति के सभी तत्त्वों का समावेश किया है, विशेषकर बुंदेलखंड से संबंधित।

इस अध्याय को मैंने चार खंडों में विभक्त किया है। पहले खंड में मैंने वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों की पृष्ठभूमि के विषय में विस्तार पूर्वक लिखा है। जिसके अंतर्गत मैंने यह बताया है कि उनका कौन-सा उपन्यास किस शताब्दी से संबध्द है और उन्हें अपने प्रत्येक उपन्यासों की सृजन-प्रेरणा कैसे मिली। वर्माजी के कुछ उपन्यास शुध्द ऐतिहासिक हैं और कुछ काल्पनिक तथा कुछ परंपरा और जनश्रुतियों पर आधारित हैं। उनके उपन्यासों की तत्कालीन देशकाल एवं वातावरण की पृष्ठभूमि, उपन्यास में आए स्त्री तथा पुरुष पात्र, स्थान, घटनाएं आदि वास्तविक हैं या काल्पनिक, कौन-सी कथा तथा घटनाएं वास्तविक हैं या जनश्रुतियों तथा परम्पराओं पर आधारित हैं आदि का

प्रमाण देते हुए उन पर बारीकी से प्रकाश डाला गया है। द्वितीय खंड में वर्मा जी के उपन्यासों में प्रयुक्त संस्कृति पहलुओं का विवेचन किया है। जिसके अंतर्गत मैंने विवाह, धर्म, अंधविश्वास, टोना - टोटका, रीत -रिवाज, तीज-त्यौहार, विभिन्न कलाएँ, लोकगीत, खान-पान, पहनावा, खेलकूद आदि जैसे विभिन्न तत्वों पर उदाहरण सहित प्रकाश डाला है। तृतीय खंड स्वदेश से संबंधित है जिसमें वर्मा जी ने 'अपने' स्वदेश बुंदेलखंड के मोह के प्रति लिखा है तथा बुंदेलखंड के रीति-रिवाज प्रकृति गीत-लोकगीत आदि का वर्णन किया है। चतुर्थ खंड में मैंने राष्ट्र का अर्थ बताकर राष्ट्र की परिभाषा दी है अतः वर्माजी के उपन्यासों में राष्ट्र के प्रति प्रेम-भावना, त्याग- बलिदान, कर्तव्यपालन की भावना, आत्मसमर्पण आदि पर चर्चा की है।

षष्ठ अध्याय :- वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों का शिल्प

साहित्य की किसी भी विधा में शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है । चाहे वह कहानी, उपन्यास, नाटक या काव्य ही क्यों ना हो। साहित्य में शिल्प ही वह माध्यम है जिसके द्वारा रचनाकार अपने एहसास को अपने भावों को एवं विचारों को अपने हदय की संवेदना को व्यवस्थित रूप में सुंदर रूप में प्रस्तुत करने का कार्य करता है। कोई भी रचना साहित्यकार के शिल्प कौशल के कारण ही विशिष्ट प्रकार की मानी जाती है। शिल्प के बिना कोई भी लेखन पूर्ण रूप से सफल नहीं होता। शिल्प के अंतर्गत कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद-कौशल, देश काल और वातावरण, उद्देश्य और भाषा शैली, का समावेश होता है।

इस अध्याय के अंतर्गत मैंने शिल्प का शाब्दिक अर्थ तथा शिल्प की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं को लिखा है। कथानक में मैंने कथानक का महत्त्व बताकर वर्मा जी के उपन्यासों में आई कथानकों की विशेषताएँ बताइ हैं। पात्र एवं चरित्र चित्रण में वर्मा जी के उपन्यासों में आए मुख्य एवं गौण नारी और पुरुष पात्रों पर तथा उनके चरित्र-चित्रण पर बारीकी से प्रकाश डाला है। संवाद कौशल को दो भागों में विभक्त किया है पात्र-अनुकूल संवाद और भाव-अनुकूल संवाद। संवाद कौशल के बाद मैंने उद्देश्य के विषय में लिखा है जिसमें वर्माजी ने किस उद्देश्य से ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों को लिखा हैं, उनकी चर्चा की है। इसके अतिरिक्त भाषा शैली के अंतर्गत वर्मा जी के ऐतिहासिक एवं सामाजिक उपन्यासों में प्रयुक्त तत्सम, तद्भव, बुन्देली, उर्दू, आदि शब्दों के साथ उनकी भाषा को सरसता प्रदान करने वाले मुहावरे, लोकोक्तियां, सूक्तियां आदि पर विशेष रूप से चर्चा की है। इसके अतिरिक्त वर्मा जी के उपन्यासों में प्रयुक्त लेखन शैली को मैंने चार भागों में विभक्त किया है- वर्णनात्मक शैली, भावात्मक शैली, विचारात्मक शैली एवं हास्य व्यंग्यात्मक शैली। उन पर भी विशद रूप से प्रकाश डाला है।

➢ **उपसंहार**

उपसंहार के अंतर्गत मैंने अपने शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय से लेकर षष्ठम अध्याय तक के चिंतन का सार निष्कर्ष रूप में रखा है और वृन्दावनलाल वर्मा जी कृत हिंदी उपन्यासों में रूपायित सामाजिक एवं सांस्कृतिक संचेतना के स्वरूप को गहराई से समझाने का प्रयत्न किया है।

➢ **संदर्भ-ग्रंथ सूची**

- सहायक ग्रंथ सूची।
- उपजीवी ग्रंथ ।
- सहायक शोध प्रबंध एवं कोश ग्रंथों की सूचीपत्र एवं पत्रिकाएँ।

भवदीय

अंजना मिश्रा